योगी के शत्रु कौन?

योगी का कोई शत्रु नहीं होता। सब उसके मित्र होते हैं। दूसरे उससे शत्रुता रखे हुए भी हों तो भी योगी तो उनको अपने मित्र ही मानकर चलता है। ठीक है, हमें इस दुनिया में सावधान रहना पड़ता है। हम ब्राह्मण यज्ञ के रक्षक हैं, हमारी यह शुभ-भावना है कि इसको कोई हानि भी नहीं पहुँचे और हम भी अपने पुरुषार्थ में ठीक चलते चलें। इस संसार में बहुत कुटिलता है, लोग धोखा भी देते हैं। सब तरह के लोग हैं। उनसे हम सावधान तो रहते हैं, परन्तु हमारे मन में उनके प्रति कोई शत्रुता का भाव, कटुता का भाव न हो तभी हमारा योगी जीवन चल सकता है। परन्तु यह तो 'शत्रु' शब्द की साधारण-सी व्याख्या है। शत्रु प्रायः हम उसको कहते हैं जो हमें हानि पहुँचाने पर तुला हुआ हो, चाहे वह ईर्ष्या-द्वेष के वश हो, चाहे बदले की भावना लिये हुए हो। शत्रु अर्थात् नुकसान पहुँचाने वाला। तो हम किसी को यह मानकर न चलें कि वह हमारा शत्रु है। योगी का कोई शत्रु नहीं होता।

बाबा ने कहा है कि साधारण भाषा में, योग का अर्थ है याद, स्मृति। जैसी हमारी स्मृति होगी, वैसी हमारी दृष्टि, वृत्ति, कृति सब-कुछ होगा। यह बहुत बड़ी श्रेष्ठतम बात है, बहुत महत्त्वपूर्ण बात है कि स्मृति से विश्व परिवर्तन हो सकता है, वृत्ति से सृष्टि बदलती है। किसी ने इस बात को समझा नहीं। सृष्टि को बदलने के लिए लोग अन्यान्य उपाय करते रहे। सुधारक आये, प्रचारक आये। बहुत-से लोगों ने अपनी-अपनी रीतियाँ अपनायीं। लेकिन यह बात किसी ने नहीं सोची कि जैसी वृत्ति, वैसी ही सृष्टि बनती है। संकल्प से सृष्टि रची जाती है। यह तो कहते हैं कि भगवान ने संकल्प से सृष्टि रची लेकिन वो संकल्प कौन-सा था, कैसा था जिससे सृष्टि रची गयी, परमात्मा के सहयोगी कौन बने थे, उनको पता ही नहीं है। उन्होंने(भगवान के सहयोगियों ने) भी विशेष प्रकार के संकल्प किये। देखिये, संकल्प कितनी महान् शक्ति है! इससे सृष्टि को बदला जा सकता है।

सारा कल्प ही हमारे संकल्पों से चलता है

संकल्प को कोई साधारण बात मत समझिये। आप समझते हैं कि मेरा संकल्प उठा, उसको दबा दिया। संकल्प चला, उसको मुख में लाकर वर्णन कर दिया। संकल्प चला, उसको कर्म में लाकर कोई नुकसान कर दिया, किसी को दुःख दे दिया। तो संकल्प से हम जो कार्य करते रहते हैं, तो यह हमारा साधारण, लौकिक और विकारयुक्त संकल्प है। सारे दिन में उठते-बैठते, चलते-फिरते हम कितने संकल्प करते हैं! हमारी सब गतिविधियाँ संकल्प से ही तो हैं। सारा कल्प ही हमारे संकल्पों से चलता है। कल्प और संकल्प सम्बन्धित हैं। यह कल्प क्या है? कल्प को कल्प क्यों कहते हैं? पाँच हज़ार वर्षों तक हमारे अलग-अलग संकल्प चलते रहते हैं। उसके बाद फिर पुनरावृत्त होते रहते हैं। जब तक भिन्न-भिन्न संकल्प चलते हैं, वह समय अवधि 5000 वर्ष है। चलते तो बाद में भी हैं लेकिन उनकी पुनरावृत्ति होती है, दूसरा कल्प शुरु होता है। चक्र दूसरा होता है। संकल्प से हमारा कर्म, हमारा भाग्य बनता है, संकल्प से हम महानता की ओर अथवा पतन की

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

ओर जाते हैं। यह सीढ़ी उतरना और चढ़ना-संकल्पों से ही है। तो क्या हम संकल्प को इतना महत्त्व देते हैं? या उसको ऐसे ही ख़र्च कर देते है?

हम लोग भी ऐसा ही तो नहीं करते?

एक व्यक्ति धनवान घराने से था। उसको अपने माता-पिता से बहुत सम्पत्ति मिली थी। उस सम्पत्ति के नशे में वो जो सिगरेट पीता था, उस सिगरेट पर दस रुपये का नोट लपेटकर पीता था। सिर्फ़ सिगरेट नहीं, उस पर दस रुपये का नोट भी लपेटता था, तब वो सिगरेट पीता था। जो उसके पास बैठे होते थे, देखकर हैरान होते थे कि दुनिया ग़रीब है, भारत में लोगों को खाने के लिए नहीं है, ग़रीबी से मर रहे हैं और यह सिगरेट पर दस रुपये का नोट लपेटकर पीता है! वो व्यक्ति इससे अपनी शान समझता था कि पैसे की क्या बात है! हमारे पास तो बहुत धन है। हम लोग भी उल्टे नशे में, देह-अभिमान के नशे में जो संकल्प रुपी धन है, अनमोल धन है, उसको व्यर्थ तो नहीं गँवा रहे हैं? उस धन से हम कहाँ पहुँच सकते हैं, आप सोचिये तो सही। कितनी महान् हमारी स्थिति हो सकती है! जैसे वो सिगरेट के ऊपर दस रुपये का नोट लपेटकर पीता था, वैसे ही हमारा हाल है। हम संकल्पों को गँवाते हैं, संकल्प के महत्त्व को नहीं जानते, वृत्ति के महत्त्व को नहीं जानते। हमारी वृत्तियाँ बदलती रहती हैं, कभी अशुद्ध, कभी शुद्ध, कभी देह-अभिमान जनित, कभी आत्म-अभिमान जनित। कभी योगयुक्त, कभी योगभ्रष्ट हमारी वृत्तियाँ रहती हैं। अगर कोई पाँच कदम आगे बढ़े और दस कदम लौट आये तो उसने प्रगति की या अवनति की? आप कहेंगे, अवनति की क्योंकि बढ़ा तो पाँच कदम और वापिस लौटा दस कदम। तो वो आगे क्या बढ़ा?

ऐसे ही हमने ट्रैफिक कन्ट्रोल के समय, योग के समय कुछ अच्छे संकल्प किये, हमारी वृत्ति अच्छी रही और बाकी समय में हमारी वृत्ति खराब रही तो हम वापिस लौट आये। जितना फासला हमने योग के द्वारा तय किया था, उससे भी कई गुणा ज़्यादा व्यर्थ में चला गया। समय तो हमारा सारा काम के लिए लगता है, योग में तो कम समय लगाते हैं, उसमें थोड़ा-सा ही चल पाये। कुछ समय मन को स्थिर करने में लगाया और जब वो स्थिर होकर ठीक होने लगा तब तक योग का समय समाप्त हो गया। उसके बाद दिनभर दूसरों के अवगुण नोट करते रह गये। दूसरों से हमारा व्यवहार श्रेष्ठ नहीं रहा। लेकिन ज़रुरत है कि हमारी वृत्ति बिल्कुल देवताओं जैसी सर्वोत्तम, सतोप्रधान, निर्मलचित्त, सन्तुष्टचित्त, हर्षितचित्त हो। सन्तुष्ट, निर्मल और हर्षित– ये तीनों गुण हम में हों। हमारी स्थिति स्थिर होने के बदले कभी ऊपर, कभी नीचे होती रही तो दिनभर में क्या प्रगति रही? अगर प्रगति नहीं होगी तो मन सन्तुष्ट कैसे होगा? मन सन्तुष्ट नहीं होगा तो हर्षित कैसे होगा? अगर सन्तुष्ट नहीं, हर्षित नहीं तो उसे व्यक्ति में प्रेम भी कैसे होगा? अगर ये सब उसमें नहीं होंगे तो उसकी सतोप्रधान वृत्ति कैसे होगी? अगर सबकी वृत्ति ऐसी नहीं होगी, तो सतयुग आयेगा कैसे? हम मनुष्य से देवता बनेंगे कैसे अगर हमें अपने संकल्पों के प्रयोग का महत्त्व और अपनी वृत्तियों को ठीक बनाये रखने का महत्त्व ही मालूम नहीं लेकिन विशेष रुप से मैं यह कह रहा था कि योगी का कोई शत्रु नहीं। यह बात बहुत-बहुत-बहुत महत्त्वपूर्ण है। क्यों यह बात महत्त्वपूर्ण है? मैंने शुरुआत इस बात से की थी कि योग का अर्थ बाबा ने कहा है, 'याद', 'स्मृति'। उस स्मृति को लेकर ही मैंने संकल्प और वृत्ति की बात की थी। लेकिन प्रारम्भ मैंने स्मृति से किया था।

मुम्बई-सायन। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत राज भवन से बाइक रैली का उद्घाटन राज्यपाल महोदय भगत सिंह कोश्यारी द्वारा किया गया। तत्पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी,संयुक्त प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़ एवं क्षेत्रीय निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़ महा. एवं आ.प्र.। साथ हैं ब्र.कु. माला दीदी।

शिमला-पंथाघाटी(हि.प्र.)। हिमाचल प्रदेश के अद्भुत प्रतिभाशाली 9 वर्षीय अरुणोदय शर्मा को स्थानीय सेवाकेन्द्र में आमंत्रित कर सम्मानित किया गया। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रजनी बहन ने अरुणोदय शर्मा को स्मृति चिन्ह भेंट किया व साथ में माता-पिता को भी ईश्वरीय सौगात भेंट की। साथ हैं ब्र.कु. सुरेश भाई, ब्र.कु. दुर्गा तथा ब्र.कु. सुनीता।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के ट्रांसपोर्ट विंग द्वारा स्थानीय विश्व शांति धाम सेवाकेन्द्र से सड़क सुरक्षा जागृति लाने के लिए मोटरसाइकिल रैली निकाली गई। इस मौके पर डॉ. संतोष दहिया,राष्ट्रीय अध्यक्ष,एशियन वूमेन बॉक्सिंग कमीशन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज दीदी तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

यू.एस.ए.-लॉस एंजेलिस। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा एस.स्टेनली एव तथा बिगेलो सेंट सेरिटोस में पाँच दिवसीय '12 ज्योतिर्लिंग दर्शन' प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभी को डॉक्यूमेंट्री विडियो दिखाई गई, गाइडेड मेडिटेशन कराया गया तथा ईश्वरीय वरदान कार्ड व प्रसाद भेंट किया गया। बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनों, भारतीय भाई-बहनों एवं स्थानीय लोगों ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर लाभ लिया।

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर शिव ध्वजारोहण करते हुए ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. विजया दीदी। इस मौके पर स्थानीय जिला पार्षद सुशील कुमार, ग्राम सरपंच यजुवेंद्र शर्मा एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

दिल्ली-पीतमपुरा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. प्रभा दीदी, डॉ. ऊषा किरण, ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा अन्य महिलायें उपस्थित रहीं।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। परसारा गांव में त्रिदिवसीय राजयोग शिविर के पश्चात् गीता पाठशाला का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शान्ता बहन। इस मौके पर राहुल सिंह, मनोज सिंसोदिया उर्फ भूरा, पालू देवी, पुष्पादेवी सहित गांव के अन्य लोग उपस्थित रहे।

उधमपुर-जम्मू। केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल की 187वीं बटालियन के बट्टलबालियां स्थित कैंप में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र वाडेयां उधमपुर द्वारा आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में बटालियन के सी.ओ. सुरेन्द्र राणा, अन्य अधिकारियों एवं जवानों के साथ ब्र.कु. गायक भानू भाई, जर्मनी से आए ब्र.कु. विपिन ब्याज, ब्र.कु. ममता बहन तथा अन्य।

कोलकाता-बारानगर(प.बंगाल)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में एएसपी श्रीमति शांति दास, डब्ल्यू.डब्ल्यू.ए.,जी.एस.एफ. काशीपुर ब्रांच की प्रेसिडेंट श्रीमति मंजरी पांडे, श्री श्री जानकी माता नेपाली धार्मिक संघ के चेयरमैन भीम बहादुर श्रेष्ठ एवं संघ के महिला कमेटी की एडवाइज़र शर्मिला पांडे, प्रेसिडेंट रोमा शर्मा व सेक्रेट्री रोमिता सिंह, गुंजायमन जी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. किरण बहन, ब्र.कु. पिंकी बहन, आशीष भाई तथा अन्य।